साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

तब अपना ही जमाना था...

--अनुपमा वर्मा

वो एक अलग मंजर, अलग फलसफा, अलग अफसाना था
गुलजार थी जिंदगी, अपना ही जमाना था
बादलों से उड़ते थे बेपरवाह, ना गम-ए-जमाना था
वो एक अलग मंजर, अलग फलसफा, अलग अफसाना था

कितने बार हम लड़खड़ाये
हौसलों ने साथ छोड़ा, कदम डगमगाये
पर हर बार, जैसे हो कोई फरिश्ता
तुम सामने आये

तुम सामने आये और बदली हमारी जिंदगी
रूबरू हुए जिंदगी के हकीकत से
दिया तूने बहुत कुछ सिखा
लगा जेसै बहुत मतलबी है अपनी दुनिया
इसके तरीके, इसके निशां

उबार कर हमें हर निराशा के बादल से
जला दी मन मै विश्वास की लौ
रौशन हुआ अंधेरे में जी रहा मकसद

फिर वक्त ने ली करवट
और बदल गये जिंदगी के मायने
जो तब थे अलग, अब है अलग

पर आज भी कहीं जिंदा है वही विश्वास
और सिसक रही हैं
आँखों में उसकी साँस